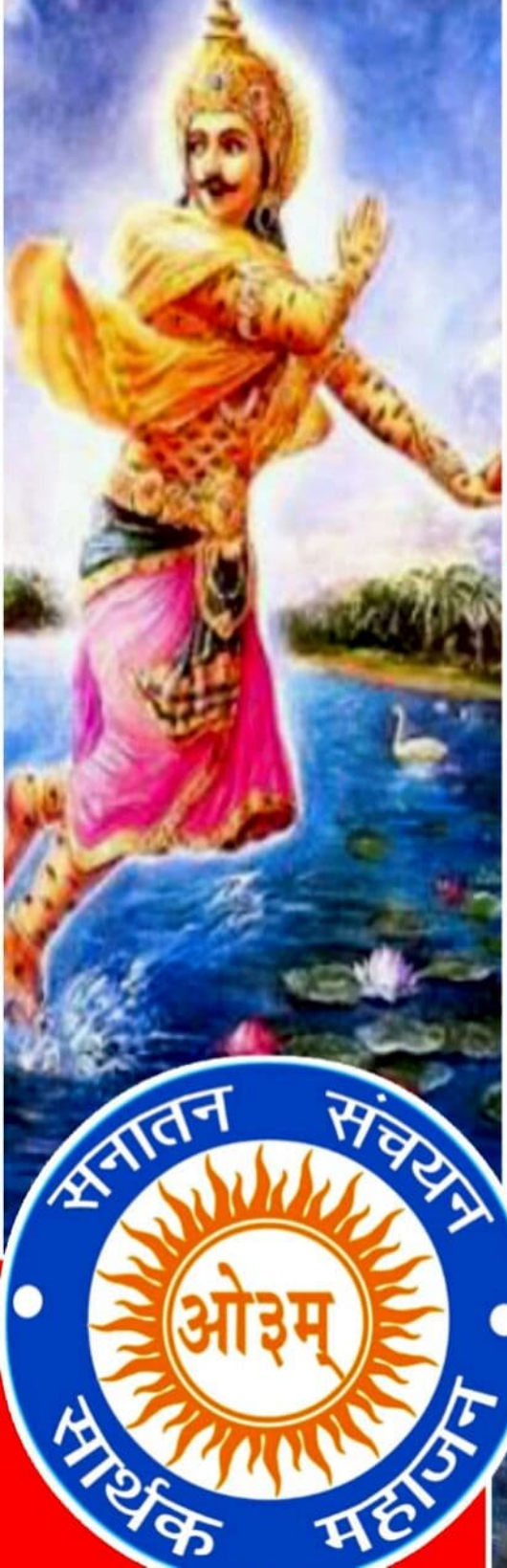

# महात्मा इन्द्र

## सार्थक महाजन

सनातन संचयन
ओ३म्
सार्थक महाजन

# ।। भूमिका ।।

बचपन से लेकर युवा अवस्था तक आपने कभी न कभी चलचित्र (tv serial) ; पुस्तको ; दादा-दादी के द्वारा सुनाई गयी कहानी आदि के माध्यम से इंद्र देव के विषय मे जरूर सुना होगा ।
अब आप स्मरण करने का प्रयत्न करे कि आपको कैसी कथा बताई गई ? - आपने यही कथा सुनी होगी कि इंद्र मेनका, रंभा, उर्वशी का नृत्य देखता हुआ , मदिरा पान करता हुआ , शची के साथ क्रीड़ा करता हुआ दिन व्यतीत करते है ; हमेशा अपनी राजगद्दी के छिन जाने के डर से भयभीत रहते है ; ऋषि महर्षियो की तपस्या भंग करते है ; दूसरो की समृद्धि से ईर्ष्या रखते है ; अहिल्या आदि पर स्त्रीयो के साथ भोग  करते है ; युद्ध मे परास्त होकर विष्णु जी से सहायता मांगने जाते है ; हठी है ; गुरुओ का अपमान करते है आदि-आदि ।।
पर यदि मै यह कहू कि इंद्र का यह चरित्र था ही नही अपितु वे महात्मा और महात्मा मे भी महायोगी थे , आप यही पर पुस्तक पढ़ना छोड़ देंगे यह सोचकर कि हमे प्रमाण ही क्या मिल सकते है । पर मै आपको वचन देता हू कि पूरी पुस्तक पढ़ने के बाद आपकी पूरी धारणा बदल जाएगी ।।

# इंद्र का अर्थ

व्याकरण की दृष्टि से एक ही शब्द के कई अर्थ होते है परंतु प्रकरणानुसार अर्थ का संचयन करना होता है ।
उदाहरण :- सोना के तीन अर्थ है । नींद , धातु, कनक पर प्रकरणानुसार अर्थ का संचयन करना होता है ।

अस्तु इंद्र के भी कई अर्थ है ।

1) ईश्वर का नाम :- सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास मे परमेश्वर के सहस्त्र (बहुत) नामों मे एक नाम इंद्र भी बताया है ।
( इदि परमैश्वर्ये ) इस धातु से ' रन् ' प्रत्यय करने से इन्द्र शब्द सिद्ध होता है । जो अखिल ऐश्वर्ययुक्त है , इससे परमात्मा का नाम इंद्र है । और तो और स्वामी जी ने अपने ऋग्वेद और यजुर्वेद भाष्य मे कई स्थान पर इंद्र का अर्थ परमेश्वर ही किया है ।
2) जड़ देव :- सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास मे इंद्र का अर्थ बिजली किया गया है और शतपथ ब्राहमण 14:4:7 का संदर्भ दिया है ।
ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के ग्रंथप्रामाण्याप्रामाण्यविषयः मे इंद्र का अर्थ सूर्य किया है ।

3) चेतन देव (आर्य) : सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास मे स्वामी जी ने लिखा है
" क्योंकि ब्रह्म विष्णु महादेव आदि महापुरुषो ने परमेश्वर की ही स्तुति उपासना करी । "
अर्थात ब्रह्म, विष्णु, महेश ईश्वर के नाम के साथ साथ एतिहासिक पात्रो के भी नाम है । मेरा मत यह है कि इंद्र का अर्थ परमेश्वर के साथ साथ जड़ देव और तो और देवराज इंद्र नामक महापुरुष का भी नाम है । क्योंकि ब्राह्मण और उपनिषद् आदि ग्रंथो मे इनका वर्णन है ।
*देवराज इंद्र के पिता का नाम कश्यप और माता का नाम अदिति था ।*
ऋषि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका मे (पृष्ठ 357) इस प्रकरण मे विज्ञान काण्ड का संचार किया है और एतिहासिक दृष्टि से इसे सही नही माना । इसका मुख्य कारण यह है कि यहा पर वैदिक आज्ञा के अनुसार बताई गई युक्ति के विरूद्ध कथा है ।
*वेद मे एक पत्नी और दो तीन पुत्रों का कुटुंब बनाने की युक्ति बताई गई है पर यहा पर एक ऋषि की 13 पत्नीयाँ बताई गई है ।
ऋषि ने यहा पर कश्यप को ईश्वर की संज्ञा दी है और शतपथ ब्राहमण का प्रमाण देकर इसे सिद्ध किया है ।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास मे लिखा है कि मनुष्यो की आदि सृष्टि त्रिविष्टप (तिब्बत) मे हुई थी । इनमे कुछ विद्वान थे उनका नाम आर्य और दुष्टो का नाम दुस्यु था । इनके मतभेद के कारण इनमे लड़ाई होने लगी । आर्य लोगो ने भूगोल मे उत्तम आर्यावर्त्त (भारत) मे आकर वास किया ।आर्यो (देवो) के पहले राजा को देवराज इंद्र कहने मे कोई संशय नही होना चाहिए क्योंकि पुराण* मे भी यह कथा आती है

अब इंद्र के माता पिता कोन थे इससे हमे कोई लाभ नही क्योंकि वही (ईश्वर) माता और वही पिता है ।

" त्वं ही नः पिता वसो..." {ऋ० 8/88/11}

# देवासुर संग्राम

देवासुर = देव और असुर (द्वंद्व समास)

देवासुर संग्राम = देव और असुरो का संग्राम (तत्पुरूष समास)

---

ब्राह्मणानीतिहासन् पुराणानि कल्पान् गाथा नाराशंसीरिति ।।

तै० आ० प्रपा० 2 अनु० 9

अस्तु यहा पुराण आदि का अर्थ ब्राह्मण आदि ग्रंथो से है न कि भागवतादि कपोल कल्पित ग्रंथ से ।

अनार्य (दस्यु) दूसरो की समृद्धि से ईर्ष्या रखते है । आर्य लोगो इस विश्व के सबसे अनुशासित होने से सबसे ज्यादा समृद्धिशाली थे । अनार्य राजा आर्यो का धन लूटने के लिए हिमालय प्रदेश पर चढ़ाई करते थे । तब यहा के राजा महाराजा उनसे युद्ध लड़ उन्हे परास्त करते थे । यही देवासुर संग्राम कहलाता है । राजा दशरथ के देवासुर संग्राम लड़ने का वर्णन अयोध्या काण्ड मे आता है । इसी प्रकार अर्जुन आदि अनेक एतिहासिक पात्रो ने दस्युओ के साथ युद्ध किया है ।

गोपथ ब्राह्मण के द्वितीय परिच्छेद , ब्रहदारण्यक उपनिषद् आदि अनेक ग्रंथो मे आदि काल मे इंद्र के साथ असुरो के युद्ध एवं इन्द्र की विजय का वर्णन आया है ।

इसका अर्थ यह है कि इंद्र एक पराक्रमी और आर्यो के पहले राजा थे ।

देवासुर संग्राम तो हर क्षण होता है । विश्व के भीतर अच्छे और बुरे लोगो का । प्रकृति के भीतर प्राण और रयि का { प्राण रयि का विषय समझने के लिए प्रश्नोपनिषद् पढ़े } । मनुष्य के भीतर सत्य असत्य का , गुण अवगुण का ।

# व्याकरण पठन - पाठन

*देवा वै यद्यज्ञेऽकुर्वत तदसुरा अकुर्वत ते देवा उपाँशौ यज्ञँस सँस्थाप्यमपश्यन् तमुपाँशौ समस्थापयन् तेऽसुरा वज्रमुद्यत्य देवानभ्यान्त ते देवा बिस्तर इन्द्रमुपाधावन् तानिन्द्रोऽन्तर्यामेणान्तरधत्त तदन्तर्यामस्यान्तर्यामत्वं यदन्तर्यामो गृह्यते भ्रातृव्यानेव तद्यजमानोऽन्तर्धते ऽन्तस्ते दधामि द्यापृथिवी अन्तरुर्वन्तरिक्षामित्याहौभिरेव लोकैर्यजमानो भ्रातृव्यानन्तर्धते ते देवा अमन्यनतेन्द्रो वा इदमभूद्यद्वयँ स्म इति तेऽन्ननु न आ भजेति सजोषा देवैरवरैः परैश्चेत्यब्रवीद्ये चैव देवः परे ये चावरे तानुभया नन्वाभजत् सजोषा देवैरवैरैः परैश्चेत्याह ये चैव देवः परे ये चावरे तानुभयानन्वाभजत्य न्तर्यामे मद्यवन् मादयस्वेत्याह यज्ञादेव यजमानं नान्तरेत्यु पयामगृहीतोऽसीत्याहापानस्य धृत्यै यदुभावपवित्रौ गृह्योयाता प्राणमपानोऽनु न्यृच्छेत् प्रमायुकः स्यात् पवित्रवानन्तर्यामो गृह्यतेप्राणापानयोर्विधृयै प्राणापानौ वा एतौ यदुपाँश्वन्तर्यामौ व्यान उपानशुसवनो ये कामयेत प्रमायुकः स्यादित्यसँस्पृष्टौ तस्य सादयेद्वधानेनैवास्य प्राणापानौ वि च्छिनति ताजक् प्र मीयते यं कामयेत सर्वमायुरियादिति सँस्पृष्टौ तस्य सादयेद्वयानेनैवास्य प्राणापानौ संख्या तनोति सर्वमायुरेति ।।*
*तैतिरीय संहिता* ***6/4/6***

**अर्थात् देवता लोग गुरु शिष्य परंपरा से ज्ञान अर्जित करते थे । गुरु से सुनकर देवता सिद्धांतो का स्मरण करते थे । वे जो संस्कृत बोलते थे वह व्याकरण के नियमो से बद्ध नही थी (अशुद्ध थी) । देवताओ ने असुरो पर विजय पाने वाले महान पराक्रमी देवराज इंद्र का विवेक सबसे उत्तम जानकर उसे व्याकरण बद्ध देव भाषा सिखने व सिखाने का आग्रह किया । इंद्र ने आग्रह स्वीकार करते हुए संयम अपनाकर व्याकरण को कण्ठस्थ किया व अन्य देवो को करवाया**

# ब्रह्मचारी महात्मा इन्द्र

*एकमेवैष मेघवन्निति होवाचैतं त्वेव ते भूयोऽनुव्याख्यास्यामि नो एवान्यत्रैतस्माद्वसापराणि पञ्च वर्षाणीति स हापराणि पञ्च वर्षाण्युवास **षतान्येकशतँ** संपेदुरेतत्तद्यदाहुरेकशतँ ह वै वर्षाणि मघवान्प्रजापतौ **ब्रह्मचर्यमुवास** तस्मै होवाच ।।*
*{ छांदोग्य 8/11/3 }*

छांदोग्य उपनिषद् मे एक कथा है जिसके अनुसार आत्म साक्षात्कार करने के उद्देश्य से देवराज इंद्र और दैत्यराज विरोचन ऋषि प्रजापति के आश्रम मे आते है और 32 वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करते है । पश्चात प्रजापति उनकी परीक्षा लेने के उद्देश्य से उन दोनो को आत्मा का गलत स्वरूप बताते है । विरोचन संतुष्ट हो वापस चला जाता पर इंद्र विवेक से जान लेता है कि यह स्वरूप गलत है । परीक्षा के उद्देश्य से प्रजापति कई बार इन्द्र को आत्मा का गलत स्वरूप बताते है । इन्द्र बार बार जान लेता है कि यह स्वरूप गलत है । इन्द्र को 5 वर्ष और ब्रह्मचर्य का पालन करवा कर प्रजापति उसे आत्मा का अस्ल स्वरूप बताते है ।

इस प्रकार 32+32+32+5 = 101 वर्ष ब्रह्मचर्य का पालन कर इन्द्र आत्म साक्षात्कार करता है ।

# वेदोद्गाता इन्द्र

**◇ उद्गाता का अर्थ है वेदमंत्रो (ऋचाओ) का गायन करने वाला ।**

*अथ हेममासन्यं प्राणमूचुस्त्वं न उद्गायेति तथेति तेभ्य एष प्राण उदगायत्ते विदुरनेन वै न उद्गात्राऽतयेष्यन्तीति तमभिद्रुत्य पाप्मनाविध्यंस यथाऽश्मानमृत्वा लोष्ठो विध्वँसेतैवँ हैव विध्वंसकमाना विष्वञ्चो विनेशुस्ततो देवा अभवन् परासुर भवत्यात्मना परास्य द्विषन्भ्रातृव्यो भवति य एवं वेद ।।*
*{ बृहदारण्यक 1/3/7 }*

बृहदारण्यक उपनिषद के प्रथम अध्याय के तीसरे ब्राह्मण मे देवासुर संग्राम की कथा इस प्रकार है : असुर लोग देवो पर हावी पड़ने लगते हैं... देव लोग वेद वाणी को अपना उद्धारक समझ कर किसी उद्गाताको ढूंढते हैं जोकि वेद गायन कर देवों में पुरुष बढ़ा सके... जब भी देव किसी उद्गातक को ढूंढते हैं तो असुर आकर उसे मार देते हैं पर जब वे अपने राजा अर्थात इंद्र का चयन करते हैं तो इंद्र असुरों का विनाश कर देता है । इससे इंद्र वेदो के उद्गाता बने

*तस्य हैवाहोरात्राणि । अमुष्मिँल्लोके शेवधिं न धयन्ति । अधीतँ हैव स शेवधिमनु परैति । भरद्वाजो ह त्रिभिरायुर्भिर्ब्रह्मचर्यमुवास । तँ ह जीर्णिँ स्थविर शायनम् । इन्द्र उपव्रज्योवाच । भरद्वाज । यत्ते चतुर्थमायुर्दद्याम् । किमेनेन कुर्या इति । ब्रह्मचर्यमेवैनेन चरेयमिति होवाच ।।*
*{ तैत्तिरीय ब्राह्मण 3/8/11/3 }*

**तैंत्तिरीय ब्राह्मण के अनुसार देवराज इंद्र ने बृहस्पति और भारद्वाज देव के आग्रह पर उन्हें वेदों का उपदेश दिया । इंद्र ने वृहस्पति और भारद्वाज देव के साथ 30 वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन कर उन्हें वेदों की अखंडता और नित्यता का ज्ञान दिया । साथ ही साथ यह बताया कि संपूर्ण विद्याओं का भंडार वेद है और यही स्वतः प्रमाण है**

*तस्माद्वा एते देवा अतितरामिवान्यान्यदग्निर्वायुरिन्द्रस्ते ह्योनन्नेदिष्ठं पस्पृशुस्ते ह्योनत्प्रथमो विदांचकार ब्रह्मोति ।।*
*{ केनोपनिषद् 4/3 }*

**केनोपनिषद के इस वचन का यह अर्थ है कि इंद्र ने अग्नि तथा वायु की अपेक्षा ब्रह्मा को बहुत निकट से और सर्वप्रथम जाना ।।**

# आयुर्वेदाचार्य इंद्र

*ब्रह्मा स्मृत्वाऽऽयुषे वेदं प्रजापतिमजिग्रहत् ।*
*सोऽश्विनौ तौ सहस्राक्षं सोऽत्रिपुत्रादिकान्मुनीन् ।।*
*तेऽग्निवेशादिकांसते तु पृथक् तन्त्राणि तेनिरे*
*{ अष्टांगहृदयम 1/3 }*

**अष्टांग हृदयम के इस सूत्र का अर्थ यह है कि ब्रह्मा जी ने सबसे पहले आयुर्वेद शास्त्र का स्मरण करके उसे दक्ष प्रजापति को ग्रहण करवाया दक्ष प्रजापति ने अश्विनी कुमारों को पढ़ाया अश्विनी कुमारों ने देवराज इंद्र को पढ़ाया उन्होंने अत्रिपुत्र आदि महर्षियों को पढ़ाया था । आत्रेय आदि ने अग्निवेश ,भेड़ ,जतूकर्ण, पराशर ,हरित, क्षारपाणी आदि को पढ़ाया और अग्निवेश आदि महर्षियों ने अलग-अलग तंत्रों से इसका विस्तार किया ।।**

*अथ खलु भगवन्तममरवरमृषिगणपरिवृतमाश्रमस्थमं काशिराजं दिवोदासं धन्वन्तरिमौपधेनववैतरणौरभ्रपौष्कलावतकरवीर्य गोपुररक्षितसुश्रुतप्रभृतय ऊचुः*
*{ सुश्रुत सुत्रस्थानम् 1/3 }*

सुश्रुत संहिता के इस सूत्र से यह ज्ञात होता है की देवराज इंद्र से धनवंतरी आदि ने आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया...

*अषयः खलु कदाचिच्छालीना यायावराश्च ग्राम्यौषध्याहारः सन्तः सांपन्निका मन्दचेष्टा नातिकल्याश्च प्रायेणा बभूवः*
*ते सर्वसामितिकर्तव्यतानमसमर्थाः सन्तो ग्राम्यवासकृतमात्मदोषं मत्वा पूर्वनिवासमपगतग्राम्यदोषं शिवं पुण्यमुदारं मेध्यमगम्यमसुकृतिभिर्गङ्गाप्रभवममरगन्धर्वकिन्नरानुचरितमेनकरत्न नि चयमचिन्तयाद्भुतप्रभाव ब्रह्मर्षिसिद्धचारणानुचरितं दिव्यतीर्थौषधिप्रभावमतिशरण्यं हिमवन्तममराधिपतिगुप्तं जग्मुर्भृवांगिराऽत्रिवसिष्ठकश्यपागस्तयपुलस्त्यवामदेवासितगौतम प्रभृत्योमहर्षयः*
*{ चरक चिकित्सास्थानम् 4/3 }*

चरक संहिता के इस सूत्र में यह कहा गया है कि एक बार देवराज इंद्र के पास आयुर्वेद संबंधी उपदेश सुनने के लिए भृगु अंगिरा अत्रि विशिष्ठ कश्यप अगस्त पुलस्त्य वामदेव असित गौतम आदि अनेक महर्षि गए थे ।

प्राचीन ग्रंथों के प्रमाण देकर मैंने यह सिद्ध कर दिया है कि इंद्र देवों में सबसे बलवान होने के कारण देवराज कहलाए इन्होंने अनेक देवासुर संग्राम में असुरों पर विजय पाई ; देवराज इंद्र देवों में सबसे विद्वान थे इस कारण देवों ने उन्हें संस्कृत सीखने और सिखाने का आग्रह किया; इंद्र ने आत्म साक्षात्कार करने के लिए 101 वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन किया था ; देवराज इंद्र एक महान वेदोद्गाता थे और वेद के गूढ़ रहस्य को सर्वप्रथम और सबसे अच्छे से जानने का पुरुषार्थ सफल रहा...
क्या आपकी धारणा में कुछ परिवर्तन आया ?
आपने यह सुना पड़ा था कि इंद्र पर स्त्रियों के साथ गमन करते थे। पर मैने छांदोग्य उपनिषद से प्रमाण देकर यह सिद्ध कर दिया कि 101 वर्षों तो महात्मा इंद्र ने ब्रह्मचर्य का पालन किया था । उन्होंने आत्म साक्षात्कार किया अस्तु वे योगी हुए । और योगी को योग दर्शन के साधनपाद के 30 सूत्र* के अनुसार ब्रह्मचर्य का पालन करना अति आवश्यक है तो किस प्रकार वे पर स्त्रियों के साथ गमन कर सकते हैं ?

---

*अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमः { योगदर्शन 2/30 }

आप सब ने यह पढ़ा सुना की इंद्र मेनका , रंभा आदि स्त्रियों का नृत्य देखता और शशि के साथ भोग करता हुआ दिनचर्या को निकाल देता था। यह कैसे संभव हो सकता है क्योंकि इंद्र उपदेश सुनने और सुनाने के लिए निरंतर आते जाते रहते थे। 400 वर्ष की आयु में से 100 वर्ष तो उन्होंने प्रजापति जी के पास लगा दिए व्याकरण सीखने में भी काफी समय लगा होगा और वेद आदि पढ़ना और भृगु एवं भारद्वाज को पढ़ाना। आयुर्वेद का पढ़ना और पढ़ाना इन सब में 100 साल तो अवश्य लग गए होंगे। तो इंद्र को समय ही कब मिलता होगा भोग विलास करने का ?

आपने यह पढ़ा सुना होगा कि इंद्र शीघ्र ही क्रोधित हो जाते थे और ऋषि महर्षियो की तपस्या में विघ्न डालते थे यह किस प्रकार संभव है प्रजापति ने इंद्र को तीन बार आत्मा का गलत स्वरूप बताया परंतु फिर भी इंद्र क्रोधित नहीं हुए अपितु धैर्य और संयम के साथ बार-बार प्रजापति से आत्मा का सही स्वरूप ग्रहण करने का आग्रह किया ।

आपने यह पढ़ा सुना होगा कि इंद्र युद्ध में परास्त होकर विष्णु जी के पास जाते थे । यह किस प्रकार संभव है इंद्र वह देवासुर संग्राम जीत जाते थे जो अन्य देव जीतने में असमर्थ थे ।

आपने यह सुना पड़ा होगा कि देवराज इंद्र दूसरों से ईर्ष्या रखते थे परंतु ऐसा कैसे हो सकता है इंद्रदेव तो आयुर्वेद के प्रकांड विद्वान थे और आयुर्वेद में ईर्ष्या को मानसिक रोग माना गया है*

मुझे लगता है कि अब आपकी पूर्व धारणा बदल गई होगी । अब आपके मन मे इन्द्र देव का गौरवशालीइतिहास बैठ गया होगा । आगे पढने से पहले एक बार "महात्मा इन्द्र की जय" इस प्रकार का जयघोष करे...

---

*रागादिरोगान् सततानुषक्तानशेकायप्रसृतानशेषान् ।
औत्सुक्यमोहारतिदाञ्जघान योऽपूर्ववैद्याय नमोऽस्तु तस्मै ।।
{अष्टांगहृदयम 1/1}

# इंद्र और सोम

अब कई लोग यह शंका करेंगे कि इन्द्र तो मदिरा का पान करते थे तो किस प्रकार वे महात्मा हुए ।
"कहा पर लिखा है" ; वेदो मे" ; "गलत वेदो मे इतिहास नही" ; जगह जगह सोम शब्द आया है"
समाधान :- वेदो मे इतिहास नही हो सकता क्योंकि यह परमेश्वर ने आदि काल मे मनुष्य को प्रदान किये थे । वेद के मुख्य विषय - ज्ञान, कर्म, उपासना है । इतिहास न होने से देवराज इंद्र का वर्णन भी नही आ सकता । महर्षि दयानन्द ने वेद भाष्य मे इन्द्र का अर्थ प्रकरणानुसार ईश्वर, बिजली, सूर्य आदि किया है । और यही उचित अर्थ है । यदि देवराज इंद्र का वर्णन कही है तो वे है ब्राह्मण ग्रंथ ।
अब बात करते है सोमरस की । सोमरस का अर्थ मदिरा नही क्योंकि ऋग्वेद के 8 वे मंडल के दूसरे सूक्त के 12 वे मंत्र मे मदिरा पान का निषेध है

*ह्रत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायम । ऊधर्न नग्ना जरन्ते ।।*
*{ ऋग्वेद 8/2/12 }*

सोम का वास्तविक अर्थ :-

*अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेपजा ।*
*अग्नि च विश्वसंभुवमापश्च विश्वभेषजी*
*{ ऋग्वेद 1/23/20 }*

पदार्थ :- जैसे यह ( **सोमः** ) **ओषधियो का राजा चंद्रमा वा सोमलता** ( मे ) मेरे लिए ( अप्सु ) जलो के ( अंतः ) बीच मे ( विश्वानि ) सब ( भेवजा ) ओषधि ( च ) तथा ( विश्वशम्भुवम् ) सब जगत के लिए सुख करने वाले ( अग्निम् ) बिजली को ( अब्रवीत् ) प्रसिद्ध करता है इस प्रकार ( विश्वभेषजी ) जिनके निमित्त से सब ओषधिया होती है वे ( आपः ) जल भी अपना मे उक्त सब ओषधियो और उक्त गुण वाले अग्नि को जानते है ।।

भावार्थ :- इस मंत्र मे वाआचकलुप्तोपमालंकार है । जैसे सब पदार्थ अपने गुणों से अपने अपने स्वभाव और उनमें **औषधियों की पुष्टि कराने वाला चंद्रमा और जो औषधियों में मुख्य सोम लता** है यह दोनों जल के निमित्त और ग्रहण करने योग्य सब औषधियों का प्रकाश करते हैं वैसे सब औषधियों के हेतु जल अपने अंतर्गत समस्त सुखों का हेतु मेघ का प्रकाश और जो जलों में औषधियों का निमित्त और जो जल में अग्नि का निर्मित है ऐसा जाना चाहिए ।

इस मंत्र मे स्पष्ट रूप से लिखा है कि सोम का अर्थ चंद्रमा और सोमलता है । सोमलता का अर्थ ओषधियो मे विषेश लिखा गया है ।
अर्थात सोमलता शराब नही । अब यह शंका आ सकती है कि स्वामी दयानंद ने यह अर्थ किया है ; क्या पता झुठ लिखा हो ? पर बात को समझने का प्रयास करे ! ऋग्वेद के मंडल आठ के सुक्त दो के मंत्र बारह मे मदिरा का निषेध है पूर्व बता चुके । किसी भी एक पुस्तक मे दो विरोधाभासी बाते नही होती । अस्तु महर्षि दयानंद सरस्वती जी का अर्थ सर्वोत्तम है और सोम का अर्थ मदिरा नही बल्कि ओषधि है ।
'यदि सोमरस ओषधि है तो फिर किस प्रयोजन से ?
इस ओषधि का प्रयोग पहला मंडल के तेईसवे सुक्त के ही चौथे मंत्र मे बताया गया है ।

*मित्रं वयं हवामहे वरुणं सोमपीतये । जनाना पूतदक्षसा ।।*
*{ ऋग्वेद 1 / 23 / 4 }*
*इस मंत्र के पदार्थ मे स्वामी जी ने सोम का अर्थ सुखो को देने वाले रसयुक्त पदार्थ किया है । वेद भाष्य मे देख लेना ।*

*त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वास्त्वमपो अजनयस्त्वं गाः ।*
*त्वमा ततन्थोर्वन्तरिक्षं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ ।।*
*{ ऋग्वेद 1/91/22 }*
*यहा सोम को रोग प्रतिरोधक शक्ति, बल प्रदान करने वाली, समस्त रोगो का विनाश करने वाली ओषधि बताया है इसके जनक परमेश्वर की उपासना करनी चाहिए। भाष्य मे देख लेना।*

**मुझे लगता है कि अब आप समझ ही गए होंगे कि सोम का अर्थ मदिरा नहीं है अपितु आयुर्वेदिक औषधि है जो कि हमारी रोग प्रतिरोधक शक्ति , बल को बढ़ाती है और समस्त रोगों का नाश करती है पश्चात मनुष्य को सुख प्रदान करती है...**

# इन्द्र और अहिल्या

शंका :- आप इंद्र को महात्मा कहते हो परंतु इंद्र ने तो अहिल्या जोकि गौतम ऋषि की पत्नी थी उसके साथ अनैतिक संबंध बनाए थे रामायण के बालकांड में स्पष्ट रूप से इसका वर्णन आता है

समाधान :- रामायण मे यह सर्ग परिक्षिप्त ( मिलावटी ) है ।

शंका :- स्वामी जगदीश्वरानंद सरस्वती जी की रामायण मे भी वर्णित है यह कथा ।

समाधान :- गलती प्रत्येक मनुष्य से होती है स्वामी जगदीश्वरानंद सरस्वती ने ऋषि महर्षि की उपाधि भी नहीं पाई परंतु महर्षि देव दयानंद ने तो महर्षि की उपाधि पाली थी । अब तुम चुनाव करो कि किसकी बात मानोगे स्वामी जगदीश्वरानंद की या महर्षि दयानंद की क्योंकि महर्षि दयानंद ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में इस कथा को गलत सिद्ध किया है ।

शंका :- अब तो आप आर्य समाज की वाल्मीकि रामायण को भी परिक्षिप्त कहने लगे । वाह जी वाह

समाधान :- पहले ही कह चुके की गलती प्रत्येक मनुष्य से होती है स्वामी जगदीश्वरानंद सरस्वती जी ने सर्वोच्च अनुवाद किया है रामायण का परंतु वह शत-प्रतिशत सटीक नहीं आजकल तो  सोना भी पूर्णतः विशुद्ध नहीं होता । आजकल तो आधुनिक तकनीको से बनाई गई दवाईयो के विज्ञापन मे भी 99.9% अशुद्धिया समाप्त करने की बात प्रदर्शित होती है ।

शंका :- स्वामी जगदीश्वरानंद सरस्वती जी की रामायण न पढे ?

समाधान :- यदि कोई बिमार है ; एक दवाई है जिसका विज्ञापन दावा करता है कि इसे लेकर 90% संभव है कि व्यक्ति पूर्णतः ठीक हो जाएगा तो क्या व्यक्ति को दवा नही दोगे ?

यदि तुम उसे दवा नही देते यह कहकर कि 10% संभावना है ठीक न होने की तो बेशक तुम बेवकूफ हो !

यह कथा रामायण का भाग नहीं हो सकती क्योंकि प्रकरण अनुसार यह कथा श्री राम और लक्ष्मण को विश्वामित्र जी सुना रहे हैं । वैदिक संस्कृति में गुरु द्वारा शिष्य को अश्लील

कहानी बताना वर्जित है तो किस प्रकार महर्षि विश्वामित्र श्री राम को इंद्र अहिल्या समागम के बारे में बता सकते है :

*दमश्च स्वाध्यायप्रवचने च ।*
*{ तैत्तिरीयोपनिषद् शिक्षावल्ली 9 }*

*कथा का सत्य स्वरूप ।*
*इन्द्रगच्छेति । गौरवास्कन्दिन्नहल्यायै जारेति । ताद्यन्येवास्य चरणानि चैरेवैनमेतत्प्रमोदयिषति ।।*
*{ शतपथ ब्राह्मण 3/3/4/18 }*

सूर्य का नाम इंद्र रात्रि का नाम अहिल्या तथा चंद्रमा का नाम गौतम है। यहां रात्रि और चंद्रमा का स्त्री पुरुष के समान रूपक अलंकार है । चंद्रमा अपनी स्त्री रात्रि से सब प्राणियों को आनंद कराता है और उस रात्रि का जार आदित्य है । अर्थात जिसके उदय होने से रात्रि अंतर्धान हो जाती है । और जार अर्थात यह सूर्य ही रात्रि के वर्तमान रूप श्रृंगार को बिगड़ने वाला है । इसीलिए यहा स्त्री पुरुष का रूपक अलंकार बांधा है , कि जैसे स्त्री पुरुष मिलकर रहते हैं वैसे ही चंद्रमा और रात्रि भी साथ साथ रहते हैं ।

*सूर्य्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्व इत्यपि निगमो भवति । सोऽपि गौरुच्यते ।। { निरुक्त 2/6 }*

चंद्रमा का नाम गौतम इसलिए है कि वह अत्यंत वेग से चलता है और रात्रि को अहिल्या इसलिए कहते हैं कि इसमें दिन लय हो जाता है ।

*जार आ भगम् । जार इव भगम् । आदित्योऽत्र जार उच्यते, रात्रेर्जरयिता ।। ( निरुक्त 3/16 )*

तथा सूर्य रात्रि को निवृत्त कर देता है इसलिए वह उसका जार कहाता है ।

इस उत्तम रूपक अलंकार विद्या को अल्प बुद्धि वाले पुरुषों ने बिगाड़ के सब मनुष्यों में हानिकारक फल धर दिया है... इसलिए सब सज्जन लोग पुराणोक्त मिथ्या कथाओं को मूल से ही त्याग कर दें ।
( महर्षि दयानंद सरस्वती )

# लेखक स्वपरिचय

मेरा नाम सार्थक महाजन है । इस पुस्तक को लिखते हुए मेरी आयु 14 वर्ष है । मुझे वैदिक संस्कृति से जुड़े हुए लगभग 1 वर्ष हो चुका है और इस 1 वर्ष में मुझे वह ज्ञान मिला है जो मुझे पिछले 13 वर्षों में नहीं मिला...
सत्य संचार की यह श्रृंखला मेरे यूट्यूब चैनल से शुरू होती है । इस यूट्यूब के माध्यम से ही मैं वैदिक संस्कृति से जुड़ा और इसी यूट्यूब के माध्यम से मैंने वैदिक संस्कृति का प्रचार किया । मेरी वीडियोज मुख्यतः विधर्मीयो को उत्तर देने के लिए बनाई गई हैं । कुछ पाखंड खंडनी भी है
कोरोना महामारी के कारण चल रहे लॉक डाउन में दिखाए जाने वाले चलचित्र ( tv serial ) इंद्रदेव के उज्जवल चरित्र का हनन कर रहे थे इसलिए यह पुस्तक लिखनी पड़ी
आगे भी इस प्रकार की पुस्तक लिखने की योजना है । मै अपने युट्युब चैनल पर एक सप्ताह की एक विडियो डालता हू । उसे जरूर देखे । नाम :- सनातन संचयन । मै टेलीग्राम चैनल ई समिधा का बहुत बहुत धन्यावाद देता हू जो स्मभवतः मेरी पुस्तक को चैनल मे upload करेंगे...

## सहायक सामग्री :-

- राहुल आर्य जी की इन्द्र पर Video
( thanksbharat.com )
- एकादशोपनिषद्
( स्वामी सत्यव्रत सिद्धांतालंकार )
- गोपथ ब्राह्मण
( क्षेमकरणदास त्रिवेदी )
- शतपथ ब्राह्मण
( गंगाप्रसाद उपाध्याय जी )

- ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका
( महर्षि दयानंद सरस्वती )
- सत्यार्थ प्रकाश
( महर्षि दयानंद सरस्वती )
- अष्टांगहृदयम्
( ब्रह्मानंद त्रिपाठी )
- योगदर्शन
( ब्रह्ममुनि परिव्राजक )